14

पवित्र आत्मा की अगुआई

(यूहन्ना 16)

''मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा'' (आयतें 12, 13)।

यीशु ने अपने जाने के बाद अपने प्रेरितों के पास पवित्र आत्मा भेजने की प्रतिज्ञा की। उसने इस प्रतिज्ञा को इस प्रकार से बताया था जिससे प्रेरितों को सबसे बड़ी तसल्ली लगे: ''तौभी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा'' (16:7)। उसने उन्हें यह भी बताया था कि आत्मा संसार को उसके परमेश्वर होने, उसकी सेवकाई, उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के विषय में निरुत्तर करेगा (16:8–11)। आत्मा ने संसार को यीशु के संदेश को ठुकराने और उसे अर्थात परमेश्वर के धर्मी जन को दोषी ठहराने की उसकी बुराई का पाप दिखाना था। उसने न्याय की उस बात को जो उस सच्चाई को जो उसने दी थी को उनके इनकार करने के कारण आने वाले न्याय को और स्पष्ट करना था।

इस बातचीत को जारी रखने के रूप में यीशु ने अपने प्रेरितों को यह भी वचन दिया कि पवित्र आत्मा उनकी अगुआई करेगा और उन्हें अपने काम के योग्य दूत बनने के योग्य बनाएगा। वह उन पर सब कुछ प्रगट नहीं कर पाया पर उसने उनके कदम अपनी सच्चाई के मार्ग पर टिका दिए। आत्मा ने आकर उन्हें आवश्यक हर अतिरिक्त सच्चाई को प्रगट करना था। यीशु की मृत्यु, उसके पुनरुत्थान और पिन्तेकुस्त के दिन के बाद प्रेरितों ने उस प्रकाशन जो प्रभु उन्हें देना चाहता था पूरी तरह से समझने की स्थिति में होना था।

विशेषकर, आत्मा ने आकर उनके लिए क्या करना था?

सब सत्य का

आत्मा ने उन्हें ''सब सत्य का'' मार्ग बताना था। यीशु ने कहा, ''परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा।'' यूनानी भाषा में इस बात पर ज़ोर देते हुए कि यीशु और आत्मा ''वह'' सच्चाई प्रगट कर रहे हैं, यहां पर ("the") उपपद शामिल किया।

पवित्र आत्मा द्वारा दी जाने वाली सच्चाई दोतरफ़ा अर्थात आगे और पीछे दोनों की ओर देखने की होनी थी। आत्मा ने प्रेरितों को वे सब बातें याद दिलानी थी जो यीशु ने उन्हें बताई थीं।

वे अपने दिमाग से किसी भी बात को जो यीशु ने उन्हें बताई थी निकलने नहीं दे सकते। आत्मा ने उन्हें वह सब बताना था जो उन्हें जानना आवश्यक था जिसे वे यीशु से सीखने को तैयार नहीं थे। उसने उन्हें बताया, ''परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह तुम्हें स्मरण कराएगा'' (14:26)।

प्रेरितों के लिए इन बातों का कितना महत्व रहा होगा! इनमें उस अधिकार का संकेत था जो प्रेरितों को दिया जाने वाला था। आत्मा के द्वारा संदेश देकर उन्होंने दूत बनना था। इसके अलावा इन शब्दों में उस संदेश की पूर्णता पर ज़ोर दिया गया जिसे प्रेरितों ने प्रचार करना और सिखाना था। उन्हें ''*सब* सत्य का अर्थात पूरी सच्चाई का रास्ता बताया जाना था।'' पहली सदी और आने वाली सब सदियों की कलीसिया को जितनी भी सच्चाई की आवश्यकता थी वह उन पर प्रगट होनी थी। यहूदा ने अपने सुनने वालों से ''उस विश्वास के लिए पूरा प्रयत्न'' करने का आग्रह किया ''जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया'' (यहूदा 3)।

परमेश्वर की इच्छा के अनुसार

पवित्र आत्मा ने कोई नई शिक्षा नहीं देनी थी बल्कि परमेश्वर की इच्छा से मेल खाती बातें ही बतानी थीं। यीशु ने कहा, ''क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही करेगा'' आत्मा ने अपनी बढ़ाई करने अर्थात ''अपनी ओर से'' या अपनी स्वयं की योजना देने नहीं आना था। बल्कि उसका उद्देश्य वही बताना था जो पिता ने उसे बताने को दिया था। यीशु की तरह ही आत्मा ने भी अपनी ओर से कोई बात नहीं बतानी थी। अपनी सेवकाई के आरम्भ में यीशु ने कहा था, ''मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता हूं। जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं'' (5:30)। आत्मा की भूमिका यीशु के मिशन को ही लेकर उसे बढ़ाना था जिससे पिता की इच्छा पूरी हुई थी।

आत्मा ने अपनी कोई नई शिक्षा नहीं देनी थी। बल्कि इसने उसी सच्चाई को व्यापक और पूर्ण अर्थ में समझाना था जो इतनी अधिक जानकारी को प्रेरितों के ग्रहण न कर पाने के कारण यीशु नहीं दे पाया था। वे उस समय जब यीशु उन से बातें कर रहा था पूर्ण सच्चाई के बोद्ध को सह नहीं सके। वह सच्चाई जो यीशु ने और आत्मा ने संसार को दी दोनों एक ही हैं; परन्तु उसका पूर्ण प्रकाशन करते हुए आत्मा ने यीशु के आगे बताया। उसे कलीसिया के साथ रहने और संसार में सच्चाई को बनाए रखने के लिए भेजा था।

परमेश्वर की सनातन मंशा को पूरा करते हुए

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों पर प्रगट करना था कि भविष्य में क्या होने वाला है। यीशु ने कहा, ''और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।'' परमेश्वर की सनातन मंशा को पूर्ण रूप में रखा जाता है। पुरखाओं और मूसा के युग के लम्बे वर्षों से परमेश्वर अपनी इस बड़ी योजना को लाने पर काम कर रहा था। अब समय के पूरा होने पर (देखें गलातियों 4:4), मसीहा ने हर पाप के लिए, सदा के लिए, और सब लोगों के लिए श्रेष्ठ बलिदान देना था। अन्तिम बलिदान ने वास्तविकता परमेश्वर के लिए अन्त में यह कहना सम्भव बनाना था, ''मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा और

उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा'' (यिर्मयाह 31:34)। पुराने नियम के समयों के हर बलिदानों को यीशु के बलिदान में अपनी पूर्णता मिलनी थी। पवित्र आत्मा उसे स्पष्ट करने के लिए जो पुत्र ने किया था, वह प्रगट करने के लिए जो संसार के लिए परमेश्वर की चल रही योजना के अनुसार होना आवश्यक है और पूरे मसीही युग के लिए यीशु के प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए आना था।

सारांश

आत्मा ने आने वाले दिनों के लिए कलीसिया के लिए अगुआई देने के साथ साथ संसार के सामने और कलीसिया के हाथों में सच्चाई रखनी थी। उसने उस भविष्य को भी प्रगट करना था जिसकी कलीसिया को आशा और अपेक्षा हो सकती थी। ''वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध'' होने के कारण कलीसिया को सच्चाई से पवित्र किया जाना था। इस पवित्र किए जाने से ही अन्त के समय में मसीह की अपनी अर्थात कलीसिया को अपनी पूरी महिमा में पेश कर पाएगा। वचन के साथ अपने जुड़ाव के द्वारा कलीसिया को प्रभु से मिलने के लिए तैयार किया जाएगा, जिसमें कोई कलंक, झुर्री या कोई और ऐसी बात न हो; वह उसे अपने लिए लेने आने के समय पवित्र और निर्दोष पाना चाहता है (इफिसियों 5:26, 27)।

यीशु की बातों से प्रेरितों को कितनी हिम्मत मिली होगी। उसकी घोषणा ने उन्हें अहसास दिला दिया कि उन्हें अकेले नहीं छोड़ा जाना था। सब सत्य में अगुआई के लिए उनके पास पवित्र आत्मा को भेजा जा रहा था। उसने यीशु की तरह ही प्रेरितों पर परमेश्वर के संदेश को प्रगट करते रहना था, और उनकी आंखों को खोलते रहना था कि भविष्य में क्या होने वाला है। पवित्र आत्मा के आने के लिए हम परमेश्वर के धन्यवादी हैं!

''पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो, यह जान लो कि कान लगाकर मेरी बातें सुनो।... परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई है'' (प्रेरितों 2:14-16)।

''उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा; तुम्हारे बेटे-बेटियां भविष्यवाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे'' (योएल 2:28)।